B.M.A. College Baheri Darbhanga (LNMU)
B.A (Hons) Part - 2 Paper - 4

1
11-09-2020

गरीबी का अर्थ अथवा अवधारणा, Dr. S. K. Singh.
Dept of Economics

(MEANING OR CONCEPT OF POVERTY)

आज सरकार, राजनीतिज्ञ, समाज-सुधारक, आदि सभी गरीबी के बारे में बात करते है, लेकिन सभी को गरीबी के सही अर्थ का बोध नही होता है। सामान्यतया गरीबी का आशय लोगो के निम्न जीवन-स्तर से लगाया जाता है। जीवन स्तर सापेक्ष अथवा निरपेक्ष दृष्टि से देखा जा सकता है। अतः गरीबी की धारणा को दो रूपो मे व्यक्त किया जा सकता है।
(1) निरपेक्ष गरीबी (Absolute poverty)।
(2) सापेक्ष गरीबी (Relative poverty)।

(1) निरपेक्ष गरीबी (Absolute poverty) - एक व्यक्ति की निरपेक्ष गरीबी से अर्थ है कि उसकी आय या उपभोग व्यय इतना कम है कि वह न्यूनतम भरण पोषण स्तर के नीचे स्तर पर रह रहा है। इसी बात को दूसरे शब्दो में इस प्रकार कह सकते है, कि "गरीबी से अर्थ मानव की आधारभूत आवश्यकताओं - खाना कपड़ा, स्वास्थ्य सहायता आदि की पूर्ति हेतु पर्याप्त वस्तुओं व सेवाओं को जुटा पाने में असमर्थता से है।" इस तरह यह कहा जा सकता है, कि "गरीबी से अर्थ उस न्यूनतम आय से है जिसकी एक परिवार के लिए आधारभूत न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आवश्यकता होती है तथा जिसे वह परिवार जुटा पाने में असमर्थ होता है।" इस गरीबी को निरपेक्ष गरीबी कहते है। जो परिवार उस न्यूनतम आय को जुटा पाने में असमर्थ होता है तब कहा जाता है कि वह परिवार गरीबी रेखा से नीचे का जीवन व्यतीत कर रहा है।

(2) सापेक्ष गरीबी (Relative poverty) सापेक्ष गरीबी आय की असमानताओं के आधार पर परिभाषित की जाती है। इस सम्बंध मे विभिन्न वर्गों या देशो के निर्वाह-स्तर अथवा प्रति व्यक्ति आय की तुलना करके गरीबी का पता लगाया जाता है। जिस वर्ग या देश के लोगो का जीवन स्तर या प्रति व्यक्ति आय का स्तर नीचा रहता है वे उच्च निर्वाह स्तर या प्रति व्यक्ति आय वाले लोगो की तुलना में गरीब माने जाते हैं

B.M.A. College Baheri Darbhanga (LNMU)
B.A (Hons) Part-I Paper-I

Page No. 1
Date 11-09 2020

समय के आधार पर बाजार का वर्गीकरण. Dr. S.K. Singh
Deptt of Economics

Classification of Market on the basis of Time)

समय के आधार पर बाजार को चार भागों में बाँटा जा सकता है। यह विभाजन मार्शल के द्वारा किया गया है:

1) अति-अल्पकालीन बाजार (Very short period Market) अति अल्पकालीन बाजार को दैनिक बाजार (Daily Market) भी कहा जाता है। अति-अल्पकालीन बाजार के अन्तर्गत वस्तु की पूर्ति हमेशा स्थिर रहती है। उत्पादकों या पूर्तिकर्ताओं के पास इतना कम समय होता है कि वे वस्तु की पूर्ति को माँग के अनुसार बढ़ा नहीं सकते हैं। इस प्रकार की प्रमुख वस्तुएँ दूध, दही, सब्जी तथा मछली, अण्डे, आदि है। अतः अति अल्पकालीन बाजार में वस्तु की पूर्ति का प्रभाव शून्य (zero) रहता है, जबकी माँग का महत्वपूर्ण स्थान है। इस प्रकार की क्रिया से जिस मूल्य का निर्धारण होता है उसे बाजार मूल्य (Market price) कहा जाता है।

2) अल्पकालीन बाजार (Short period Market) - अल्पकालीन बाजार में अति-अल्पकालीन बाजार की अपेक्षा समय कुछ अधिक मिलता है। इस बाजार की समयावधि छः माह के लगभग हो सकती है। यदि किन्ही कारणों से वस्तु की माँग बढ़ जाती है, तब वस्तु की पूर्ति करने वाले एक सीमा तक वस्तु की पूर्ति बढ़ाने में सफल हो जाते हैं। फिर भी वस्तु के पूर्तिकर्ता वस्तु के उत्पादन को बढ़ाने के लिए अपने लिए यन्त्रों अथवा प्लाण्टों में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं कर पाते। अल्पकालीन बाजार में भी पूर्ति की अपेक्षा माँग का ही अधिक प्रभाव रहता है, परन्तु मूल्य में उतार-चढ़ाव अति-अल्पकालीन बाजार की अपेक्षा कम होते हैं। अतः अल्पकालीन बाजार मूल्य को अल्पकालीन सामान्य मूल्य (Short Period Normal price) कहा जाता है।

3) दीर्घकालीन बाजार (Long Period Market) दीर्घकालीन बाजार के अन्तर्गत पूर्तिकर्ताओं को अधिक समय मिल जाता है। इस बाजार में माँग के बढ़ने के साथ-साथ पूर्ति को भी बढ़ाया-घटाया जा सकता है। पूर्तिकर्ता उत्पत्ति के साधनों में समन्वय (Adjustment) स्थापित कर सकता है। पूर्ति का प्रभाव महत्वपूर्ण होने के कारण वस्तु का मूल्य उत्पादन लागत के बराबर निर्धारित होता है।